# 6 युद्ध-कांड

## रण यात्रा और सेतु रचना

सुग्रीव ने राम का आदेश पाते ही वानर-सेना को एकत्र होने के आदेश दिए। इधर राम हनुमान से परामर्श करने लगे। उन्होंने हनुमान से कहा, ''तुमने मेरे साथ और सारे रघुवंश के साथ जो उपकार किया है इसका बदला मैं नहीं चुका सकता। तीनों लोक देकर भी मैं तुमसे उऋण नहीं हो सकता। मैं तुम्हारे उपकार से दबा जा रहा हूं।''

अपनी प्रशंसा सुनकर हनुमान ने सिर झुका लिया। सेना समुद्र कैसे पार करेगी, शक्तिशाली रावण को पराजित कैसे किया जाएगा आदि सोचते-सोचते वे शोक में डूब गए। तब सुग्रीव बोले, आप शोक छोड़कर क्रोध कीजिए। आपके प्रताप से समुद्र को रास्ता देना पड़ेगा। उद्यम से कार्य अवश्य सिद्ध होता है और शोक से काम बिगड़ जाता है।''

इतने में लाखों वानर गरजते हुए आ पहुंचे। उनकी गर्जना से आकाश गूँज उठा। सुग्रीव की सेना देखकर राम प्रसन्न हुए और बोले, ''आज उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र है। इसी नक्षत्र में सीता का जन्म हुआ था। मैं इसी नक्षत्र में चलना चाहता हूं। विजय यात्रा के लिए मुहूर्त शुभ है। सेना को कूच करने की आज्ञा दो।''

सुग्रीव ने सेनानायक नील को प्रस्थान की आज्ञा दी। सब यूथपति अपने-अपने दलों के साथ चल पड़े। हनुमान ने राम को और अंगद ने लक्ष्मण को अपने कंधों पर चढ़ा लिया। जामवंत और हनुमान सेना के पीछे के भाग की रक्षा करते हुए चले। वानर-वीर पेड़ों और पहाड़ों को रौंदते हुए उछलते-कूदते चल दिए। चारों ओर कोलाहल भर गया। राम, लक्ष्मण और सुग्रीव की जय से दिशाएँ गूंज उठीं। सेना दिन-रात चलती रही और महेन्द्र पर्वत पर पहुंचकर उसने घेरा डाल दिया।

जब से हनुमान ने लंका में आग लगाई थी तब से वहां राक्षसों में बड़ा डर समा गया था। वे सोचते कि जिसके दूत का यह हाल है वह जब स्वयं आ जाएगा तो जाने क्या दशा होगी। नगर का हाहाकार देखकर विभीषण रावण के पास गए और बोले, ''भाई मैं बिना पूछे ही नीति और समझदारी की बात आपसे कहने आया हूं। मुझे आपका और सारी राक्षस जाति का कल्याण इसी में दिखाई देता है कि श्रीराम से बैर न किया जाए। सीताजी को राम के पास लौटा दें। आपको पता चल ही गया होगा कि वानरों की विशाल सेना लेकर वे समुद्र के उत्तरी तट पर आ पहुंचे हैं।''

सीता के लौटाने की बात सुनकर रावण ने क्रोधित होकर विभीषण को वहां से चले जाने के लिए कहा। उसने यह भी कहा कि मैं सीता को किसी तरह नहीं लौटाऊंगा।

तब रावण अपने सभा-भवन में गया। वहाँ उसने अपने पुत्रों और मंत्रियों, सेनापतियों को बुलाया और नगर की रक्षा के आदेश दिए। अपने बल का वर्णन करके उसने उनकी राय भी मांगी। सबने रावण की मन की बात कही। केवल विभीषण ने विरोध किया और कहा कि बिना जाने शत्रु को छोटा नहीं समझना चाहिए। अगर तुम से कोई शक्ति होती तो हनुमान को ही न पकड़ लेते। रावण से उन्होंने कहा कि महाराज मेरी प्रार्थना पर ध्यान दें। सीता को राम के पास भेज देने में ही कल्याण है। रावण यह सुनते ही आग बबूला हो गया। वह बोला- ''ऐसे मनुष्य का साथ नहीं करना चाहिए, जो ऊपर से तो हित की बात करता और भीतर - भीतर शत्रु का शुभचिंतक हो। इससे तो क्रोधी साँप के साथ रहना अच्छा है।''

विभीषण को रावण ने तरह-तरह के अपशब्द कहे और अंत में यह भी कहा कि अगर तुम्हारा मन बैरी के साथ है तो उसी से जा मिलो। विभीषण ने कहा, ''मालूम होता है कि लंका के अब बुरे दिन आ गए हैं। मेरी बातें अब आपको अच्छी नहीं लगती। आप कहते हैं तो मैं जाता हूं। कालवश नेक बात आपकी समझ में नहीं आती।'' इतना कहकर अपने चार मंत्रियों के साथ वह आकाश मार्ग से राम को मिलने के लिए चल पड़ा।

राम की छावनी में पहुँचकर विभीषण ने दूर से ही आवाज लगाई- ''वानरो! मैं राक्षसों के राजा रावण का भाई हूँ। मैंने उसे सीता को लौटा देने की बात कही तो वह क्रोधित हुआ और भरी सभा में मेरा अपमान किया। मैं अब राम की शरण में आया हूं। मुझे उनके पास पहुंचा दो।''

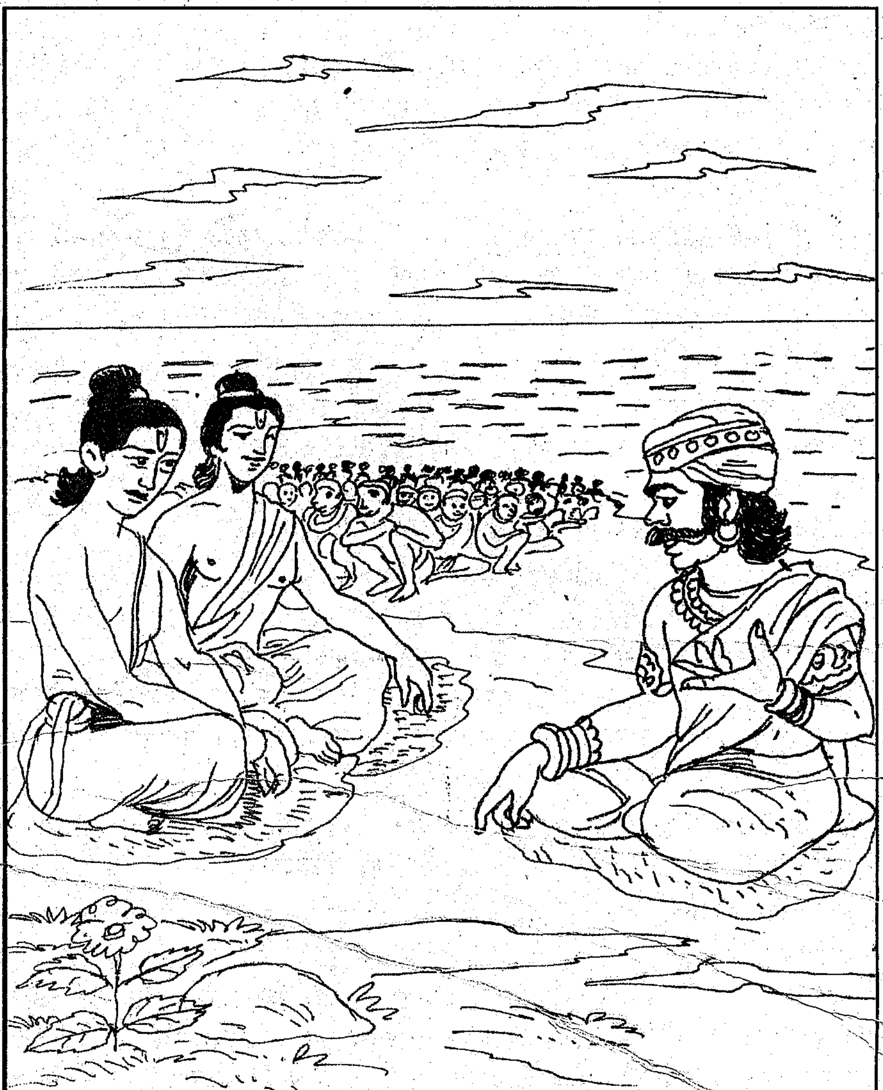

तात चरन मागउँ राखहु मोर दुलार।
सीता देहु राम कहुँ अहित न होइ तुम्हार॥

यह संदेश लेकर सुग्रीव श्रीराम के पास गए। सब बातें बताकर उन्होंने राम से कहा- "मुझे ऐसा लगता है कि ये पांचों राक्षस रावण के गुप्तचर हैं। हमारा भेद लेने के लिए उन्होंने यह तरकीब निकाली है। अगर सच भी कहते हों तो भी उनका क्या ठिकाना। जो अपने भाई का न हुआ वह हमारा क्या होगा ? श्रीराम ने गम्भीर होकर कहा- "मित्र तुमने सलाह ठीक दी है, परंतु बुद्धिमानी यह होगी कि हम उसे अपनी ओर मिला लें। संभव है कि वह अपने किसी स्वार्थ के लिए भाई से अलग होकर हमसे मिल रहा हो। सब भाई लक्ष्मण और भरत की तरह नहीं होते।" सुग्रीव ने राम की बात का विरोध किया, तो राम ने दृढ़ता से कहा, कि मेरा नियम है कि मैं शरण में आए हुए को वापस नहीं लौटाता। अगर स्वयं रावण भी इस तरह आए तो उसे भी मैं शरण दूँगा। मित्र डरने की बात नहीं। इसलिए हे वीर ! विभीषण को आदर सहित लाओ। वह हमारे तुम्हारे बहुत काम आएगा।

सुग्रीव की आज्ञा से हनुमान आदि वानर विभीषण को राम के पास ले आए। विभीषण ने दूर से ही अपना परिचय देते हुए राम के पैर पकड़ लिए और शरण मांगी। राम ने विभीषण का उचित सत्कार किया और फिर अपने पास बिठाकर लंका का हाल पूछा। विभीषण ने कहा, "रावण का बल और पराक्रम तो सारे संसार में प्रसिद्ध है। आपने भी सुना ही होगा। उसने देवताओं को जीतकर यमराज को भी बांध लिया था। जब वह गदा लेकर चलता है तो पृथ्वी कांप उठती है। हमारा मंझला भाई कुंभकर्ण युद्ध में पहाड़ के समान अड़ जाता है। बड़े-बड़े पत्थरों की चोट भी उसे फूल जैसी लगती है। रावण के बड़े पुत्र मेघनाद ने तो इन्द्र को ही जीत लिया था। उसके नाम से देवता खोहों और कंदराओं में घुस जाते हैं। रावण का सेनापति प्रहस्त जाना माना योद्धा है। कैलाश पर्वत पर उसने जो युद्ध किया उसकी चर्चा संसार भर में हो रही है। उसके अतिरिक्त अतिकाय, अकंपन, महोदर आदि अनेक वीर लंका में हैं। लंका नगरी सब ओर से सुरक्षित है। उसे जीतने के लिए बल और बुद्धि दोनों की आवश्यकता है। रावण के पास तप और वरदान का भी बल है। शंकर और ब्रह्मा के वर प्राप्त कर वह अपने को अजेय मानता है।"

विभीषण की बात सुनकर श्रीराम ने दृढ़ता से कहा, 'विभीषण! तुम चिन्ता न करो। मैं तुम्हें वचन देता हूं कि इन सब को मार कर तुम्हें लँका का राज दूँगा।' विभीषण ने राम के चरणों में प्रणाम करके कहा- "श्रीमान् इस युद्ध में मैं पूरी तरह से आपकी सहायता करूंगा। अपने प्राणों को भी न्योछावर कर दूँगा।"

तब श्रीराम ने लक्ष्मण को आज्ञा दी कि समुद्र का जल ले आओ। जल आने पर राम ने सबके सामने विभीषण का राजतिलक कर दिया।

अब समुद्र को पार करने की समस्या पर विचार होने लगा। यह तय हुआ कि पहले समुद्र से ही विनती की जाए कि वह रास्ता दे दे। अगर न माने तो दूसरा उपाय किया जाए। इस निश्चय के अनुसार तीन दिन तक राम कुशा बिछा कर समुद्र से विनती करते रहे। जब वह न माना तो उन्होंने क्रोधित होकर धनुष पर कठिन बाण चढ़ाया। समुद्र में भीषण हलचल होने लगी। धुआं उठने लगा।

तट पर जहां-तहां भूमि फट गई। समुद्र में रहने वाले जलचर अकुला उठे। तब सागर लहरों के बीच से प्रकट हुआ और बोला "भगवान् क्षमा करें। मैं एक उपाय बताता हूँ। आपकी सेना में नल नाम का एक वानर है। उसने अपने पिता से समुद्र पर भी पुल बांधने की विद्या सीखी है। वह पुल बना देगा और वानर सेना पार उतर जाएगी। आपने जो बाण चढ़ा लिया है उससे मेरे उत्तरी तट पर बसे हुए दुष्टों का संहार कर दें।"

इतना कहकर समुद्र अदृश्य हो गया। राम के बाण छोड़ते ही दुष्टों की सारी भूमि रेगिस्तान बन गई। अगले दिन समुद्र पर पुल बनने लगा। सारी वानर सेना पत्थर और वृक्ष ढो-ढो कर लाने लगी।

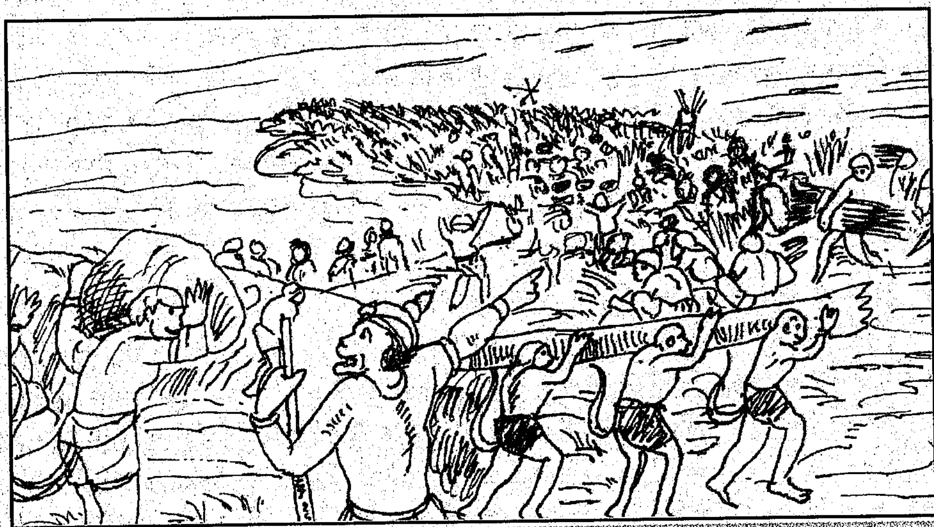

अति उतंग गिरि पादप लीलहिं लेहि उठाई।
आनि देहिं नल नीलहिं रचहिं ते सेतु बनाइ॥

बड़ी-बड़ी शिलाएं वे समुद्र में फेंकते और नील गेंद की भांति उन्हें लपक कर ले लेते। वे सेतु रचना करते जाते। पांच दिन में सेतु बंधकर तैयार हो गया। ऐसा लगता था कि सेतु से समुद्र में दो भाग हो गए हैं। सेतु बांधते ही विभीषण कुछ वानर वीरों को लेकर अपने अनुचरों के साथ पुल के उस छोर पर चला गया और गदा लेकर पुल की रक्षा करने लगा। समस्त वानर सेना पुल पारकर लंका में पहुंच गई। समुद्र के निकट सुबेल पर्वत पर राम की सेना ने पड़ाव डाल दिया। वानर जहां-तहां फल-फूल खाने लगे। विभीषण तथा सुग्रीव के साथ बैठकर श्रीराम विचार करने लगे कि युद्ध कैसे शुरू किया जाए ?

## युद्ध की तैयारियां और अंगद का लंका जाना

रावण ने जब यह सुना कि समुद्र पर पुल बांधा गया है और राम की सेना समुद्र पार कर लंका में पहुंच चुकी है, तो उसको बड़ा विस्मय और भय हुआ। उसने कभी यह सोचा भी न था कि समुद्र पर भी पुल बन सकता है। अब उसने राम की सेना का बल जानना चाहा। शुक और सारण नाम के चतुर मंत्रियों को बुलाकर उसने कहा- "राम की सेना में जाकर गुप्त रूप से वानरों के बल का पता लगाओ। शुक और सारण बड़ी माया जानते थे। बंदर बनकर वे राम की सेना में घुस गए और सावधानी से सब जगह देखने लगे, हर बात का पता लगाने लगे। उन्होंने देखा कि राम की सेना ने सारा सुबेल पर्वत ढक लिया। उसके अलावा सेना पुल से चली आ रही है। शुक, सारण आंखें बचाकर देख रहे थे जिससे कि कोई उन्हें पहचान न पाये। पर विभीषण को वे धोखा न दे सके। विभीषण ने ताड़ लिया कि वे कौन हैं। उन्हें पकड़वाकर वे राम के पास गए। पूछने पर उन्होंने राम को बता दिया कि हम रावण के गुप्तचर हैं। शुक और सारण हमारा नाम है। हम वानर सेना का भेद लेने आए हैं।"

राम मुस्कराकर बोले, "भेद ले चुके हो या अभी और कुछ लेना है। कुछ पूछना चाहो, तो पूछ भी लो और खुद देखना चाहो तो विभीषण तुम्हें दिखा भी देंगे। जब लंका लौटकर जाओ तो अपने स्वामी से

कहना कि जिस बल पर सीता को चोरी से ले गया है, उस बल को अब दिखाए। कल से मेरे बाण लंका पर बरसने लगेंगे।'' विभीषण से उन्होंने कहा- ''इन्हें छोड़ दो और जाने दो। इन बेचारों का क्या दोष।'' राम की जय-जयकार करते हुए शुक और सारण लंका लौट गए।

लंका पहुंचकर शुक और सारण सीधे रावण के पास गए और उन्होंने राम के बल तथा उनके कोमल स्वभाव की बड़ाई की। उनकी बात सुनी-अनसुनी करके रावण उन्हें सबसे बड़ी अटारी पर ले गया और बोला राम की सेना का प्रमुख वीर मुझे दिखाओ। सारण ने कहा देखिए जो इस ओर मुँह किए बार-बार गरज रहा है और जिस की गरज से लंका काँप रही है वह सुग्रीव का सेनापति नील है, और जो तिरछी आंखें किए बार-बार जम्हाई ले रहा है वह पहाड़ जैसे शरीर वाला बाली का पुत्र अंगद है, लग रहा है मानों वह युद्ध के लिए ललकार रहा है। अंगद के पीछे नल है जिसने समुद्र पर पुल बना दिया है। वह देखिए रीछों का झुंड। उसके आगे बूढ़े जामवंत खड़े हैं और बंदर को आप पहचानते ही होंगे जो मस्त हाथी की चाल से चल रहा है, लंका जलाने वाला वह केसरी पुत्र हनुमान। उसके समीप ही महाधनुर्धर राम हैं जिनकी पत्नी को आप ले आए हैं। उनकी बाई ओर मन्त्रियों सहित विभीषण बैठे हैं। राम ने उनको लंका का राजा बना दिया है। राम और विभीषण के बीच में वानर राज सुग्रीव बैठे हैं। सेना के वानरों की गिनती नहीं की जा सकती। इस सेना को जीतना कठिन है। यों अकेले राम ही लंका के लिए काफी हैं। मेरी राय यह है कि सीता को लौटा कर राम से मित्रता कर लें। शुक ने भी ऐसी बातें कही। यह सुनते ही रावण लाल - लाल आंखें कर के बोला- ''दुष्टों ! तुम्हें इतना भी नहीं मालूम कि अपने राजा के सामने शत्रु की बड़ाई नहीं करना चाहिए। मेरे सामने से हट जाओ।''

इतना कहकर रावण अन्तःपुर चला गया। वहां भी उसको यही राय मिली कि राम से सुलह करना ही ठीक होगा। परन्तु रावण ने जो मन में ठान लिया था, उससे डिगा नहीं । उसने सेना को तैयार होने के आदेश दिए।

इधर राम ने भी अपनी सेना को चार भागों में बांट दिया और यह बता दिया कि कौन-सा दल लंका के किस द्वार पर आक्रमण करेगा। उन्होंने यह भी कहा कि लक्ष्मण और मैं तथा विभीषण और उनके मन्त्री मानव रूप में रहेंगे। शेष सब वानर के बाने में ही युद्ध करेंगे। सुबेल पर्वत पर चढ़कर राम उस रात लंका का निरीक्षण करते रहे। सवेरा होते ही उन्होंने लंका को चारों ओर से घेरने का आदेश दिया। बंदरों के सिंहनाद से दिशाएँ गूंज गई।

राजनीति पर विचार करके राम ने अंगद को बुलाकर कहा कि युद्ध शुरू करने से पहले सुलह का अंतिम प्रयास किया जाए। तुम मेरे दूत बनकर लंका जाओ। अगर सीता को लौटाने को रावण तैयार न हो तो उससे कह देना कि हथियार उठाने से पहले वह अपना श्राद्ध भी कर लें, क्योंकि फिर उसके कुल में कोई न बचेगा।

अंगद उड़ कर लंका पहुंचे और निडर होकर रावण की सभा में चले गये। रावण से उन्होंने कहा ''मैं बाली का पुत्र अंगद हूँ। आप में और मेरे पिता में मित्रता थी। इसी नाते आप के पास आया हूँ। मैं अपनी अन्तिम चेतावनी देना चाहता हूँ। जानकी जी को लौटा दें, नहीं तो लंका में कोई जीवन न बचेगा। रावण बोला, ''अंगद तुम को लज्जा आनी चाहिए। अपने पिता के शत्रु की तुम दासता कर रहे हो। मेरे मित्र के तुम पुत्र हो, तो आओ मेरी ओर आकर अपने पिता की मृत्यु का बदला लो।'' इतना सुनते ही अंगद को बहुत क्रोध आया और उन्होंने रावण को बहुत बुरा भला कहा। रावण ने आज्ञा दी- ''राक्षस वीरो ! इस दुष्ट वानर को पकड़ कर मार डालो।'' चार पांच राक्षस अंगद की ओर झपटे। अंगद ने उनको पकड़ कर

मसल दिया। इसके बाद वे रावण के महल पर कूद कर चढ़ गए। महल के कंगूरों को ढहा कर वह आकाश मार्ग से ही राम के पास पहुंच गए। अंगद के पहुंचते ही राम–दल ने लंका के चारों द्वारों पर चढ़ाई कर दी।

## भयंकर मोर्चा

लंका के चारों फाटकों पर वानर सेना ने आक्रमण कर दिया था। राम, लक्ष्मण, सुग्रीव, जामवंत और विभीषण के नेतृत्व में वानर सेना ने उत्तर से आक्रमण किया। रावण की आज्ञा से उनकी चतुरंगिणी सेना चारों फाटकों से निकल पड़ी ओर राक्षसेन्द्र रावण की जय बोलती हुई वानर सेना पर टूट पड़ी। बंदरों ने उस पर पेड़ और पत्थर बरसाने शुरू किए। दुर्ग की खाई उनसे पट गई। बंदर किलकारी मारते हुए कोट पर चढ़ गए और राक्षसों को पकड़–पकड़ कर नीचे फैंकने लगे। दांत, नख, थप्पड़, और घूँसा उनके हथियार थे। राक्षस उन्हें शूल और तलवारों से काट रहे थे। हाथियों के चिंघाड़ने, घोड़ों के हिनहिनाने और रथों की घरघराहट का कोलाहल चारों ओर भर गया। दोनों ओर के बहुत से वीर मारे गए। श्रीराम के बाणों के आगे जो भी आया, मारा गया।

लड़ते–लड़ते शाम हो गई। अब मेघनाद ने अपनी ओर का मोर्चा संभाला युवराज अंगद ने उसके घोड़ों और सारथी को मार डाला। तब वह छिपकर युद्ध करने लगा। माया के कारण वह किसी को दिखाई नहीं देता था। उसने सारी सेना को पैने बाणों से छेद डाला और नागबाणों से राम लक्ष्मण को मूर्छित कर दिया। विजय घोष करता हुआ वह लंका लौट गया। उसने पिता को बताया कि राम लक्ष्मण मारे गए।

राम के मारे जाने का समाचार सुनकर रावण बड़ा खुश हुआ। मेघनाद को गले से लगाकर वह उसकी वीरता की प्रशंसा करने लगा। अशोक वाटिका से राक्षसों को बुलाकर रावण ने कहा कि पुष्पक विमान में सीता को लेजाकर दिखा दो कि राम और लक्ष्मण मरे पड़े हैं। वे अपनी आंखों से यह दृश्य देख लें। राक्षसियों ने रावण की आज्ञा का पालन किया। राम लक्ष्मण को पड़ा देखकर सीता रोने लगीं।

तब त्रिजटा ने कहा, "देखो इनके मुख पर मृत्यु का कोई चिह्न नहीं है। वे मूर्छित हैं। थोड़ी देर में उठ बैठेंगे।" विमान अशोक वाटिका को लौट गया। इधर राम लक्ष्मण को अचेत देखकर सुग्रीव रोने लगे। विभीषण ने उन्हें धैर्य बंधाते हुए कहा– "यह समय रोने का नहीं अपनी सेना संभालिए। मैं राम लक्ष्मण की चिकित्सा का प्रबन्ध करता हूँ।"

थोड़ी देर में राम की मूर्च्छा टूटी। उन्होंने लक्ष्मण को अचेत और खून से लथ पथ देखा। वे तरह तरह के विलाप करने लगे "मैं माता सुमित्रा को अब कैसे मुँह दिखाऊंगा। हाय, मैं विभीषण को लंका का राज न दे सका। सुग्रीव तुम सेना लेकर किष्किंधा लौट जाओ। मैं भी यहीं प्राण दे दूँगा। तभी विभीषण गदा लिए आते दिखाई दिए। वानरों ने समझा कि मेघनाद फिर आ गया। उनमें भगदड़ मच गई। जामवंत ने सबको बताया कि मेघनाद नहीं महात्मा विभीषण हैं।"

श्रीराम को विलाप करते देख विभीषण ने समझाया– "वीर पुरूष रणभूमि में रोते नहीं। शोक से उत्साह का नाश होता है। और सब काम बिगड़ जाते हैं। आप तो वीर शिरोमणि हैं और हम सबको रास्ता दिखाने वाले हैं, लक्ष्मण चिकित्सा से ठीक हो जाएंगे। वे केवल मूर्च्छित हैं।"

सुग्रीव ने श्वसुर सुषेण से कहा कि अगर संजीवनी और विशल्यकरणी औषधियाँ मिल जाएं तो लक्ष्मण अभी स्वस्थ हो जाएंगे।

ये बातें हो ही रहीं थी कि पक्षियों के राजा गरूड़ आ गए। उनके आते ही राम लक्ष्मण नागपाश से छूट गए। उनके घाव भर गए और वे पूरी तरह स्वस्थ हो गए। यह देखकर वानर सेना हर्ष-ध्वनि करने लगी।

उधर रावन को जब यह समाचार मिला तो उसने एक-एक करके कई राक्षस वीर लड़ने के लिए भेजे। पहले धूम्राक्ष आया। उनको हनुमान ने मार डाला। फिर बज्रदष्ट आया, वह राम लक्ष्मण से लड़ने लगा। अंगद ने बढ़कर तलवार से उसका सिर काट डाला। उसके मारे जाने पर रावण ने अकंपन को भेजा। उसके प्रहार से वानर सेना भागने लगी। तब वीर हनुमान आगे आ गए। राक्षस के तीखे बाणों की परवाह न करके उन्होंने एक बड़ा-सा पेड़ उस पर फेंका। अकंपन कुचलकर मर गया।

तब रावण का सेनापति प्रहस्त लड़ने के लिए आया। नील ने उससे युद्ध किया और उसका धनुष तोड़ डाला। तब प्रहस्त ने नील पर मूसल से प्रहार किया। उसकी चोट से नील की आंखों के आगे अंधेरा छा गया। फिर संभलकर उन्होंने एक बड़ी भारी शिला से प्रहस्त को कुचलकर मार डाला।

इन योद्धाओं के मारे जाने पर रावण स्वयं युद्ध के लिए चल पड़ा। बहुत से राक्षस वीर मेघनाद, अतिकाय, महोदर, नरांतक आदि उसके साथ थे। रावण ने पहला वार सुग्रीव पर किया और उसको अचेत कर दिया। फिर उसने सब प्रमुख वानर वीरों को घायल कर दिया। तब लक्ष्मण ने युद्ध करने की आज्ञा मांगी। हनुमान आदि वीर वानरों के साथ श्रीराम ने लक्ष्मण को युद्ध के लिए भेजा। पहले हनुमान से भिड़ंत हुई। दोनों ने एक दूसरे को मुक्का मारा। मुक्के की चोट से रावण लड़खड़ा गया और हनुमान के बल की प्रशंसा करने लगा। अब लक्ष्मण और रावण का बाण युद्ध होने लगा। पहले रावण ने बाणों की मार से लक्ष्मण को विचलित कर दिया। लक्ष्मण ने रोष करके रावण का धनुष काट दिया और बाणों से उसका शरीर छेद डाला। उसे लगा कि लक्ष्मण प्राण ही ले लेंगे। तब रावण ने उनपर ब्रह्म शक्ति चला दी। शक्ति के लगते ही लक्ष्मण गिर पड़े। रावण उनके पास चला गया और उन्हें उठाकर लंका ले जाने की कोशिश करने लगा। पर किसी तरह उठा न सका। यह देखकर हनुमान दौड़े आए। उन्होंने रावण को एक घूँसा मारा जिससे वह मूर्च्छित हो गया। हनुमान ने लक्ष्मण को उठाकर राम के पास पहुंचा दिया। राम के पास पहुंचते ही वे स्वस्थ होकर उठ बैठे। इधर रावण की मूर्छा टूटी और वह बाणों की वर्षा करने लगा। अब राम ने अपने पैने बाणों से पहले रावण का रथ नष्ट कर दिया और फिर उसकी छाती में अनेक बाण मारे। रावण का मुकुट भी पृथ्वी पर गिर पड़ा। तब श्रीराम बोले, ''रावण! जाओ! आज मैं तुम्हें छोड़ता हूँ, अस्त्र शस्त्र से सज्जित होकर और नये रथ में बैठ कर फिर आना।'' लज्जित होकर रावण लौट गया। इस प्रकार राम-रावण संग्राम की पहली मुठभेड़ समाप्त हुई।

## कुंभकर्ण का युद्ध

राम के हाथों पराजित होकर रावण अपने मन में बड़ा लज्जित हुआ। उसका अहंकार चूर-चूर हो गया। राम को जैसा उसने समझ रखा था उससे वे कहीं बढ़कर निकले। उसके भीतर का बल थक गया। उसके बहुत से वीर मारे जा चुके थे। सेनापति प्रहस्त भी मारा गया। इस संकट के समय उसने अपने छोटे भाई कुंभकर्ण को जगाने की बात सोची। राक्षसों की एक टोली के साथ बहुत से भैंसे और मदिरा के घड़े भेजे। एक दिन जगकर कुंभकर्ण छः महीने सोता था।

सब राक्षस मिलकर कुंभकर्ण को जगाने लगे। उन्होंने बाजे बजाए, हाथ-पैर खींचे, बाल और कान खींचे, फिर भी वह नहीं जगा। जब उसपर हाथी दौड़ाए गए, तब कहीं वह जागा। अंगड़ाई लेता हुआ

व्याकुल कुंभकरणा पहि आवा, विविध जतन करि ताहि जगावा ॥

वह उठ बैठा। उठते ही उसने कई घड़े मदिरा पीकर बहुत सा कच्चा मांस खाया। तब कुंभकर्ण ने पूछा, ''मुझे किसने और क्यों जगाया है'' मंत्री ने कहा, राक्षसेन्द्र आपको याद कर रहे हैं। बड़ी देर से आपकी प्रतीक्षा में हैं।''

कुंभकर्ण रावण के पास पहुँचे और उसके चरणों में प्रणाम किया। फिर रावण से जगाने का कारण पूछा। रावण बोला, ''वीरवर ! तुम सो रहे थे। तुम्हें नहीं मालूम, इस बीच यहां कितना अनर्थ हुआ है। राम की वानर सेना समुद्र पर पुल बांधकर लंका में आ गई है और वह नगर को घेरा डाले पड़ी है। कई दिन से युद्ध चल रहा है। हमारे अनेक बड़े-बड़े वीर मारे गए हैं। सेनापति प्रहस्त भी वीरगति को प्राप्त हुए। अब तुम्हारा ही सहारा है।''

कुंभकर्ण हंसा और बोला, ''हमने तुम्हें पहले ही बताया था कि बुरे कर्मों का फल बुरा ही होता है। तुमने हमारी बात पर कोई ध्यान ही नहीं दिया। मंदोदरी और विभीषण की सलाह को भी तुमने ठुकरा दिया।'' रावण कुछ रुष्ट-सा होकर बोला, ''भाई मैंने तुम्हें उपदेश सुनाने के लिए नहीं जगाया। जो हुआ सो हुआ। मुझे तुम्हारे पुरुषार्थ की जरूरत है। तुम्हारे पुरुषार्थ से ही मेरा संकट दूर हो सकता है। कुंभकर्ण को रावण पर दया आ गई उसने कहा, ''तुम चिन्ता न करो। अब मैं रणभूमि को जा रहा हूँ। राम-लक्ष्मण को मारकर तुम्हें सुखी करूंगा।''

कुंभकर्ण की बातें सुनकर रावण प्रसन्न हुआ और उसकी वीरता की प्रशंसा करके युद्ध के लिए उसे विदा किया।

हाथ में एक बड़ा-सा त्रिशूल लेकर कुंभकर्ण दुर्ग से बाहर आ गया। कुंभकर्ण को देखते ही वानर सेना में भगदड़ मच गई। अंगद ने बड़ी कठिनाई से उनको रोका। वे उसपर बड़े-बड़े वृक्ष और शिलाए फेंकने लगे। कुंभकर्ण की सेना से तो जहां-तहां वानर भिड़ गए, पर उसके सामने आने का कोई साहस न करता। हनुमान आगे बढ़े। उन्होंने बड़ी भारी शिला फेंककर उसे थोड़ा घायल किया। कुंभकर्ण ने अपने त्रिशूल से उसका हृदय फाड़ दिया। रक्त की धार बह निकली। हनुमान को व्याकुल होते देखकर वानर सेना में त्राहि-त्राहि मच गई। कुंभकर्ण ने अनेक प्रमुख वानर वीरों को मारकर अचेत कर दिया। तब अंगद

आगे बढ़े। कुंभकर्ण के वार को बचाते हुए उन्होंने उसकी छाती में घूंसा मारा। थोड़ी देर के लिए कुंभकर्ण मूर्च्छित हुआ, फिर उसने अंगद और सुग्रीव दोनों को घायल कर दिया। सुग्रीव को पकड़कर वह लंका की ओर ले चला। मार्ग में सुग्रीव की मूर्छा टूटी। उन्होंने अपने पैने नखों और दांतों से उसके नाक-कान काट डाले और सीना फाड़ दिया। रक्त बहता देखकर कुंभकर्ण ने सुग्रीव को उछालकर पृथ्वी पर दे मारा। वे तुंरन्त उठकर भागे। कुंभकर्ण भी लौट पड़ा और वानर सेना पर टूट पड़ा। अब लक्ष्मण कुंभकर्ण से युद्ध करने लगे। लक्ष्मण की बाण-वर्षा से कुंभकर्ण प्रसन्न हुआ। वह लक्ष्मण से बोला, वीरवर! तुम युद्ध विद्या में प्रवीण हो। मैं मान गया। अब मुझे राम के सामने पहुंचने दो। मैं अब उन्हीं को मारना चाहता हूं।'' लक्ष्मण ने संकेत से राम को दिखा दिया। राम तैयार खड़े थे। युद्ध छिड़ गया। दाहिने हाथ में कुंभकर्ण एक भारी मुग्दर लिए था। एक दिव्य बाण चलाकर राम ने कुंभकर्ण की वह भुजा काट दी। भुजा के नीचे कितने ही वानर दब गए। तब बाएं हाथ से वृक्ष उखाड़कर कुंभकर्ण राम की ओर दौड़ा। दूसरी भुजा भी राम ने काट डाली। तब वह मुंह फाड़कर राम की ओर दौड़ा। राम ने उसके दोनों पैर काट डाले। फिर भी वह नहीं मरा। तब श्रीराम ने एक बाण से उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। वानर सेना में श्रीराम की जय-जयकार होने लगी। बची-खुची राक्षस सेना लंका की ओर भाग गई।

**लक्ष्मण मेघनाद युद्ध**

कुंभकर्ण के वध से रावण का दिल टूट गया। वह शोक से मूर्छित होकर गिर पड़ा और तरह-तरह से विलाप करने लगा, ''आज मेरी दाहिनी भुजा कट गई। देवताओ! आज तुम्हारा डर दूर हो गया। भाई! तुम्हारे मरने से लंका अनाथ हो गई। संकट में अब मेरा कोई सहारा नहीं।''

त्रिलोक विजयी रावण को विलाप करते देख त्रिशिरा, देवांतक, नरांतक आदि उसके पुत्र आ गए और रावण को ढाढस बंधाने लगे। वे बोले, आज्ञा दें तो हम अभी जाकर राम लक्ष्मण को पकड़कर आपके सामने ले आएं।'' रावण ने उन्हें छाती से लगाकर आशीर्वाद दिया और अपने भाई महापार्श्व और मदोदर के साथ अपने पुत्रों को युद्ध के लिए भेजा। अंगद नरांतक से भिड़ गया। नरांतक ने अंगद की छाती पर भाला मारा। भाला टूट गया। दोनों अब मल्ल युद्ध करने लगे। नरांतक के मुक्के से अंगद को मूर्छा आ गई। फिर सचेत होकर उन्होंने नरांतक के हृदय पर ऐसा घूंसा मारा कि वह सदा के लिए सो गया। अब देवांतक, त्रिशिरा आदि सब राक्षस अंगद पर एक साथ टूट पड़े। अंगद को घिरा हुआ देखकर हनुमान और नील दौड़ आए। हनुमान ने देवांतक को मार डाला और नील ने महोदर को। फिर हनुमान ने त्रिशिरा का भी काम तमाम कर दिया। अब महापार्श्व बचा रहा। वानर ऋषभ उससे जाकर भिड़ गया और थोड़ी देर में ही मुक्के से उसे मार डाला।

अब अतिकाय नाम का राक्षस युद्ध के लिए आया। उसका शरीर कुंभकर्ण के समान विशाल था। ब्रह्मा को प्रसन्न कर उसने कई वरदान ले लिए थे। वानर सेना ने भी समझा कि मरा कुंभकर्ण फिर लड़ने आ गया है। वे डर के मारे भागने लगे। अतिकाय बिना बाण छोड़ रथ दौड़ाता हुआ श्रीराम के पास पहुंचा और बोला, ''हिम्मत हो तो मुझ से युद्ध करो, नहीं तो चुपचाप लौट जाओ। मैं लक्ष्मण से नहीं लडूंगा। वह अभी बालक है।''

लक्ष्मण ने उसे ललकारा, पहले बालक से ही निपट लो। लक्ष्मण उस पर बाण चलाने लगे, परन्तु अतिकाय पर उनका कोई असर नहीं हुआ। उसके दिव्य कवच से टकराकर वे व्यर्थ हो जाते। तब लक्ष्मण ने उसके घोड़ों और सारथी को मार डाला और रथ को तोड़ दिया। अपने तीखे बाणों से अतिकाय ने लक्ष्मण को क्षत-विक्षत कर दिया। स्वस्थ होने पर लक्ष्मण ने अनेक अमोघ बाण छोड़े पर अतिकाय का

जामवंत ने कहा, पवनपुत्र! तुम हिमालय पर जाओ और कैलाश शिखर से मृत संजीवनी, शिल्यकरणी, सुवर्णकरणी और संधानो औषधियां ले आओ इनकी चमक से ही तुम इन्हें पहचान लोगे। तब राम, लक्ष्मण और हम सब वानर स्वस्थ हो जाएंगे।

हनुमान तत्काल एक ऊँचे पर्वत पर चढ़ गए। उन्होंने अपनी पूंछ ऊपर उठाई, पीठ झुकाई, कान सिकोड़े और भुजाओं को आगे की ओर तथा जंघाओं को पीछे की ओर फैलाया और आकाश में उड़ चले। बात की बात में हिमालय के शिखर में जा पहुंचे। उन्हें वहां अनेक औषधियां चमकती हुई दिखाई दीं। जब वे बताई हुई औषधियों को न पहचान सके, तो उन्होंने पर्वत शिखर को ही उठा लिया और पक्षिराज गरूड़ की गति से वे लंका आ पहुँचे। औषधियों की सुगन्ध से ही राम लक्ष्मण स्वस्थ हो गए। वानर वीरों के घाव पुर गए और वे ऐसे बैठे मानो सोकर उठे हों। वानर सेना नए उत्साह से भर गई।

सुग्रीव की आज्ञा से वानर सेना ने रात में जलती हुई मशालें लेकर लंका पर धावा बोल दिया। द्वार-रक्षक प्राण लेकर भागे। बन्दरों ने लंका में घुसकर रावण के हाथीखानों और घुड़सालों में आग लगा दी। अन्न के भंडारों में भी आग लगा दी, घर घर में आग लगा दी और आग की लपटें आकाश चूमने लगीं। उनका प्रतिबिम्ब जो समुद्र में पड़ा वह भी लाल हो गया। वानर सेना के सामने जो भी पड़ा मारा गया। कंपन, प्रजंघ, यूपाक्ष और कुंभ आदि राक्षस भी मारे गए। कुंभ को मरा देख कर उनका भाई निकुंभ सुग्रीव पर टूट पड़ा। तभी हनुमान आ गए। दोनों में भंयकर युद्ध हुआ। अन्त में हनुमान ने गर्दन मरोड़ कर उसे भी मार डाला। मारकाट मचाकर वानर वीर अपने पड़ाव को लौट आए।

अगले दिन रावण ने खर के पुत्र मकराक्ष को युद्ध के लिए भेजा। श्रीराम और मकराक्ष का बाण युद्ध होने लगा। वे एक दूसरे के बाण काट कर अनायास ही गिरा देते। अवसर पाकर श्रीराम ने मकराक्ष के धनुष को काट दिया और उसके रथ को नष्ट कर दिया। तब वह त्रिशूल को हाथ में लेकर दौड़ा। राम ने उसे भी काट डाला। अब वह निःशस्त्र था। घूंसा तानकर राम की ओर दौड़ा। राम ने उसकी छाती में अग्नि बाण मारा। लोहे के किवाड़ की भांति उसका वक्ष फट गया। बची खुची राक्षस सेना लंका में घुस गई।

अब रावण के पास एक ही वीर लंका में बचा था, वह था इंद्र को जीतने वाला मेघनाद। उसने मेघनाद को बुलाया और उसकी बड़ाई करके युद्ध के लिए भेजा। रणक्षेत्र में ना जाकर मेघनाद अपनी यक्षशाल में गया और होम करने लगा। देव दानवों को प्रसन्न कर, रथ में बैठ वह युद्ध भूमि में आ गया। उस समय उनके मुख पर सूर्य के समान तेज था। मंत्र शक्ति से अदृश्य होकर बाण बरसा रहा था। राम लक्ष्मण का एक भी बाण उस तक न पहुँचता था। उसके पास से कोई आवाज़ न आती थी इसलिए शब्द भेदी बाण उसका कुछ न बिगाड़ सकते थे। राम लक्ष्मण घायल हो गए और वानर वीर हताश। श्रीराम के रोक देने से लक्ष्मण ने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग नहीं किया।

लंका के दुर्ग में घुसकर मेघनाद पश्चिमी द्वार से फिर निकल आया। अबकी बार उसके रथ में सीता जी बैठी देखी गई। मेघनाद ने म्यान से तलवार निकाली और रथ में बैठी सीता के बाल पकड़ कर नीचे घसीट लिया और तलवार से उसका सिर काट दिया। तब उसने हनुमान से कहा, "अपनी आँखों से देख लो, जिस सीता के लिए तुम लड़ रहे हो उसको मैंने मार दिया। सीता वध का समाचार पाकर श्रीराम लक्ष्मण भी रोने लगे। इतने में महात्मा विभीषण पहुँच गए। उन्हें मेघनाद की माया का पता था। उन्होंने कहा, "रघुनन्दन! जिस सीता का वध मेघनाद ने किया है वह माया की थी, हमारी देवी सीता न थी।" उन्होंने यह भी बताया कि इस समय मेघनाद निकुंभिला देवी के मन्दिर में यज्ञ कर रहा है। उसका अनुष्ठान पूरा हो गया तो किसी के मारे न मरेगा। हे महाबाहु! मेरे साथ लक्ष्मण को तत्काल भेजिए जिससे हम उसे यज्ञ से उठकर युद्ध के लिए विवश कर दें।

राम की आज्ञा पाकर लक्ष्मण युद्ध के लिए तैयार हुए उन्होंने राम के चरण छूकर कहा, ''आज मैं आपकी कृपा से मेघनाद को अवश्य मार डालूंगा कोई भी उसे बचा न सकेगा।''

वानर सेना के साथ विभीषण के पीछे लक्ष्मण चल दिए। वानर और भालू राक्षस सेना पर टूट पड़े। लंकापुरी में हाहाकार मच गया। निकुंभिला के सामने मेघनाद से तब न रहा गया। वह यज्ञ छोड़ कर युद्ध के लिए चल दिए। लक्ष्मण विभीषण के बताए हुए स्थान पर बरगद के पेड़ के नीचे मेघनाद के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। इतने में मेघनाद का रथ वहां आ गया विभीषण को देखकर वह समझ गया कि लक्ष्मण को सारा भेद उन्हीं ने बताया है। वह विभीषण को भलाबुरा कह कर लज्जित करने लगा, ''आप मेरे पिता के सगे भाई हैं। लंका में ही जन्मे और बड़े हुए। आप को समझना चाहिए था कि अपने अपने ही होते हैं। दूसरे श्रेष्ठ होने पर भी अपने नहीं हो सकते। आप देश द्रोही हैं। आप के अलावा लंका का भेद जानने वाला वहां कौन था? आप ही लक्ष्मण को यहां ले आए हैं।''

लक्ष्मण और मेघनाद में युद्ध छिड़ गया। उनकी बाण वर्षा देखकर रोयें खड़े हो जाते थे। विभीषण बराबर लक्ष्मण का उत्साह बड़ा रहे थे। वानरों को भी उन्होंने बढ़ावा दिया और कहा, ''मैं ही इसे मारता पर मेरा भतीजा है। लक्ष्मण के हाथों आज अवश्य मरेगा। तुम राक्षसी सेना पर टूट पड़ो।''

लक्ष्मण ने मेघनाद का कवच काट दिया और मेघनाद ने लक्ष्मण का। तब लक्ष्मण ने उनके सारथी को मार डाला। मेघनाद रथ भी हाँकता और बाण भी छोड़ता। तब बन्दर मेघनाद के रथ घोड़ों पर चढ़ गए और घूंसों की मार से उन्हें गिरा दिया। तब वह लंका से दूसरा रथ लाकर युद्ध करने लगा। लक्ष्मण ने मेघनाद के धनुष को काट दिया। उसने दूसरा धनुष उठाया, लक्ष्मण ने उसे भी काट दिया। तब वह तीसरा धनुष लेकर युद्ध करने लगा। अब वह हिम्मत हार रहा था। इतने में विभीषण ने अपनी गदा से मेघनाद के रथ के चारों घोड़ों को मार दिया। मेघनाद ने रथ से कूदकर विभीषण पर शक्ति प्रहार किया। लक्ष्मण ने उसे बीच में ही काट दिया। अब लक्ष्मण ने विश्वमित्र के दिए इंद्रास्त्र को धनुष पर रखा और कान तक खींच कर उसे छोड़ दिया। मेघनाद का सिर कट कर पृथ्वी पर गिर पड़ा। राक्षस सेना भाग खड़ी हुई। लक्ष्मण को आगे कर विभीषण श्रीराम के पास पहुंचे और लक्ष्मण के पराक्रम की बात उन्हें बताई। श्रीराम ने लक्ष्मण को गले से लगा लिया और उनकी प्रशंसा की श्रीराम बोले, ''अब हमारी विजय निश्चित समझो।'' लंका का आखिरी योद्धा मारा गया वानर सेना की जय-जयकार होने लगी।

### राम रावण युद्ध

मेघनाद के मरते ही रावण की कमर टूट गई। कुछ समय तक वह शोक में डूबा रहा। फिर वह क्रोध में लाल हो गया। उसकी शक्ल बड़ी डरावनी हो गई कोई उसके मुँह की ओर आंख उठाकर न देख पाता था।

**तब रावण दस सूल चलावा, बाजि चारि महि मारि गिरावा।**

उसने बची हुई सारी राक्षस सेना को युद्ध के लिए चलने की आज्ञा दी। सिंह की तरह गरजता हुआ वह भी रथ पर चढ़कर निकला। लड़ाई के बाजे बजने लगे। उसके चलते ही अनेक अपशकुन हुए।

**स्रवत रुधिर धायउ बलवाना, प्रभुपुनि कृत धनु सर संधाना।**
**तीस तीर रघुवीर पबारे, भुजन्हि समेत सीस महि पारे॥**

उसके घोड़ों के पैर बार-बार फिसल जाते, रथ के ऊपर गिद्ध मंडराते और उसकी बांई भुजा बार बार फड़कती। रावण ने इसकी कुछ भी परवाह न की वह घमण्ड से कहता हुआ युद्ध करने लगा कि आज मैं राम से सबका बदला लूंगा।

भयंकर युद्ध छिड़ गया। बंदरों की लाशों से सारी भूमि भर गई। रावण जिधर को भी मुँह करता भगदड़ मच जाती। सुषेण और सुग्रीव ने वानर सेना को संभाला। सुग्रीव और विरूपाक्ष का युद्ध छिड़ गया। दोनों एक दूसरे पर घातक चोटें करने लगे। सुग्रीव ने विरूपाक्ष के हाथी पर चोट की। वह बैठ गया। तब विरूपाक्ष ने तलवार से सुग्रीव को घायल कर दिया। अंत में सुग्रीव के मुक्के के प्रहार से विरूपाक्ष ढेर हो गया। इसी प्रकार द्वन्द्व युद्ध में उन्होंने महोदर को भी मार डाला। इसी बीच वीरवर अंगद ने महापार्श्व का काम तमाम कर दिया।

अब केवल रावण बचा। वह फन कुचले हुए नाग की भांति फुंकारने लगा। उसके सामने बंदरों को भागते देख श्रीराम धनुषबाण लेकर आ गए। अब राम-रावण युद्ध छिड़ गया। वे एक दूसरे के प्रहार को बड़ी देर तक व्यर्थ करते रहे। उनके बाण जब चलते तो रणभूमि में बिजली-सी कौंध जाती। इतने में लक्ष्मण और विभीषण भी आ गए। विभीषण ने रावण के सारथी को और घोड़ों को मार दिया। विभीषण को आगे देखकर रावण को क्रोध आया। उसने विभीषण को मारने के लिए एक भयंकर शक्तिबाण छोड़ा। लक्ष्मण ने उसे बीच में ही काट दिया। तब उसने दूसरी शक्ति छोड़ी। उस दिव्य शक्ति को देखकर लक्ष्मण ने विभीषण को पीछे कर लिया। शक्ति लगते ही लक्ष्मण अचेत हो गए। श्री राम पास में ही थे। उन्होंने उस शक्ति को खींचकर निकाल दिया। रावण को मौका मिल गया। उसने श्रीराम को बुरी तरह घायल कर दिया। क्रोध के कारण राम की आंखों से आग बरसने लगी। हनुमान और सुग्रीव को लक्ष्मण की देखभाल में छोड़कर वे रावण से भिड़ गए। उन्होंने कहा- 'रावण! तेरा काल आज तुझे मेरे सामने ले आया है।

आज पाप पर पुण्य की विजय होगी। अंधकार पर प्रकाश की विजय होगी। देवताओं और ऋषि-मुनियों का दुःख दूर होगा। वानर मित्रो, तुमने बहुत युद्ध किया। अब तुम पहाड़ की चोटियों से मेरा और रावण का युद्ध देखो। राम-रावण जैसा युद्ध फिर तुम्हें कभी देखने को न मिलेगा।' इधर सुषेण ने हनुमान द्वारा संजीवनी बूटी मंगाकर लक्ष्मण की चिकित्सा की। बूटी सूंघते ही शरीर में घुसे हुए बाण अपने आप ही निकल पड़े। रक्त बहना बन्द हो गया और घाव भर गए। इस समाचार से राम की चिन्ता मिटी और वे उत्साह से युद्ध करने लगे। रावण भी राम पर बाणों की अरोक वर्षा करने लगा।

रावण सुसज्जित रथ में बैठ युद्ध कर रहा था। यह देखकर देवताओं के राजा इन्द्र ने अपने सारथी मातलि के हाथ अपना रथ श्रीराम के लिए भेजा। इस रथ में इन्द्र का विशाल धनुष, अमोघ कवच, शक्ति बाण तथा अन्य अनेक अस्त्र-शस्त्र भी थे।

अब श्रीराम इन्द्र के रथ पर चढ़कर युद्ध करने लगे। रावण ने गंधर्व अस्त्र छोड़ा। इसी नाम के अस्त्र से राम ने उसे काट दिया। तब रावण ने राक्षस-अस्त्र का प्रयोग किया, उसे राम ने गुरु अस्त्र से काट दिया। राम पर अब उसका बस न चला तो रावण ने मातलि को घायल कर दिया। इन्द्र के रथ की ध्वजा काट दी और घोड़ों पर बाण छोड़े, फिर राम को भी घायल करके रावण गरजने लगा। रावण का उत्साह बढ़ता जा रहा था। एक भयंकर शूल को हाथ में लेकर रावण बोला- ''राम! अब तुम नहीं बच सकते। यह शूल तुम्हारे प्राण लेकर ही रहेगा।'' राम ने अपने बाणों से शूल को रोकने का बहुत प्रयत्न किया, पर शूल नहीं रुका। तब श्रीराम ने इन्द्र द्वारा रथ में भेजी हुई शक्ति का प्रयोग किया। उससे ऐसा प्रकाश हुआ जैसे उल्का गिरने से होता है। शूल छिन्न-भिन्न हो गया। तब राम ने अपने पैने बाण उसके हृदय और मस्तक में मारे। रक्त की धारा बह निकली। राम रावण पर और रावण राम पर बराबर बाण बरसाते रहे।

अब रावण हिम्मत हारने लगा। जब सारथी ने यह देखा तो वह रावण को लंका में लौटा ले गया। कुछ देर में जब राक्षसराज सावधान हुआ तो वह सारथी पर बहुत बिगड़ा। सारथी ने जब कारण बताया तो वह शांत हुआ और रथ के घोड़ों को बदलवा कर फिर युद्ध भूमि में आ गया। राम का आदेश पाते ही मातलि भी अपना रथ रावण के रथ के सामने ले आए। राम अब इन्द्र के धनुष से युद्ध करने लगे और रथ के इतने निकट आ गए थे कि घोड़ों के मुँह मिल जाते थे। श्रीराम ने अपने बाणों से रावण के घोड़ों का मुँह मोड़ दिया। रावण ने भी राम के घोड़ों पर चोट की, पर उनपर कोई असर नहीं हुआ।

युद्ध का अंत दिखाई नहीं दे रहा था। राम सोचने लगे कि जिन बाणों से मैंने सहज ही खर-दूषण को मार दिया, विराध और कबंध का वध किया, बालि को मारा और समुद्र में आग लगा दी, वे बाण रावण के सामने बेकार हो गए। मातलि ने कहा, ''मैं देख रहा हूँ कि आप रावण पर तो चोट कर ही नहीं पाते। आपकी सारी शक्ति तो रावण के प्रहारों से बचने में लग रही है। जब तक आप ब्रह्मास्त्र का प्रयोग नहीं करेंगे, काम नहीं चलेगा।'' राम को अब महर्षि अगस्त्य द्वारा किए गए बाण की याद गई। अगस्त्य ऋषि को यह बाण ब्रह्माजी से मिला था। श्रीराम ने उस अमोघ बाण को धनुष पर चढ़ाया और कान तक खींचकर छोड़ दिया। रावण के वक्ष को चीरता हुआ वह बाण पार निकल गया और फिर राम के तरकस में लौट आया। रावण के हाथ से धनुष छूट गया और वह पृथ्वी पर गिर पड़ा।

रावण के मरते ही देवताओं ने श्रीराम की जय-जयकार और फूलों की वर्षा की। सुग्रीव, विभीषण, लक्ष्मण, हनुमान सब टकटकी लगाकर राम के मुंह की ओर देखने लगे।

भाई का मृत शरीर लोटते देख विभीषण शोक से व्याकुल हो गए। वे रोते हुए बोले, भाई आपके डर से तो काल भी कांपता था। जब गदा लेकर आप दिग्विजय को निकलते, तब पृथ्वी डगमगाने लगती थी। देवता अपने प्राण बचाने के लिए खोह, कंदराओं में छिप जाते। आज आप का शरीर धूल में लोट रहा है।

राम से बैर करने का यही फल होता है। मैंने बहुत समझाया पर आपने एक न मानी। हाय! आज राक्षस वंश का नाश हो गया।

श्रीराम ने विभीषण को समझाया, ''मित्र, रावण शोक करने योग्य नहीं। जिसने जन्म लिया है वह मरता अवश्य है। रावण को तो उत्तम मृत्यु मिली है। वह वीर था और उसे वीर गति ही मिली। तुम शोक छोड़कर उसका विधिपूर्वक अन्तिम संस्कार करो।'' इतने में मंदोदरी आदि रानियां भी रणभूमि में आ गई और रोने लगी। मंदोदरी के विलाप को सुनकर सबकी आंखों में आंसू आ गए। श्रीराम ने उन्हें समझा-बुझाकर उचित दाह-संस्कार करने के लिए कहा। रानियों को लेकर विभीषण नगर में चले गए।

इधर श्रीराम ने मातलि को आदर के साथ विदा किया। सुग्रीव को श्रीराम ने हृदय से लगा लिया और कहा- ''मित्र! तुम्हारी सहायता से ही इस राक्षसराज का अंत हो सका।'' वे सभी वानरों से मिले और उनसे बोले- ''तुम सबने जो मेरे साथ भलाई की है, उसे मैं कभी न भूलूंगा।''

दाह संस्कार के बाद जब विभीषण लौट आए, तो श्रीरामचन्द्र जी की आज्ञा से लक्ष्मण ने नगर में जाकर विभीषण का राजतिलक किया। विभीषण सहित सब लोग राम के पास आ गए। अब श्रीराम ने हनुमान से कहा, ''महाराज विभीषण से अनुमति लेकर अशोक वाटिका जाओ। जनकनंदिनी को युद्ध के समाचार दो। जो कुछ वे कहें मुझे आकर बताओ।

हनुमान से रण के समाचार पाकर जानकी बोली- ''मैं अब जितना जल्दी हो सके, स्वामी के दर्शन करना चाहती हूं।''

सीताजी का समाचार पाकर श्रीराम ने विभीषण से कहा- ''जानकीजी को स्नान कराकर और वस्त्रभूषणों से सजाकर लिवा लाओ।'' विभीषण ने राजभवन में जाकर वस्त्रभूषणों का प्रबंध किया और सीता जी का श्रृंगार करने के लिए चतुर स्त्रियों को अशोक वाटिका भेजा। तैयार होकर सीताजी हर्ष के साथ पालकी में बैठकर श्रीराम के पास आई। श्रीराम ने विभीषण से कहा, ''मित्र, अब मैं आज ही अयोध्या को लौट जाऊंगा। चौदह वर्षों की अवधि समाप्त हो रही है। भरत मेरे लिए दिन रात तप कर रहा है। अगर एक भी दिन की देर हो गई, तो भरत मुझे जीवित न मिलेगा इसलिए मेरे लौटने की तैयारी करें।''

**राम राम बैठे त्रैलोका, हरषित भए गए सब सोका।**

विभीषण ने लंका में रूक कर विश्राम करने के लिए बहुत कहा, पर राम राजी न हुए। तब विभीषण ने पुष्पक विमान मंगवाया। उस पर सफेद और पीली पताकाएं फहरा रही थीं। खिड़कियों में रत्न जड़े थे। वह मन की गति से चलने वाला था। विभीषण बोले, "प्रभो! विमान आ गया है, अब क्या आज्ञा है ?"

श्रीराम ने कहा इस विमान में अपने कोष से रत्न-आभूषण भर लाइए और उन्हें वानर सेना में बरसा दीजिए। इन्होंने प्राणों का मोह छोड़कर मेरे लिए युद्ध किया है। विभीषण ने तुंरत आज्ञा का पालन किया। रत्न-आभूषण लूटकर वानर सेना बड़ी प्रसन्न हुई और रत्नों से खेलने लगी। सीता और लक्ष्मण सहित श्रीराम विमान पर बैठे। सुग्रीव, विभीषण और प्रमुख वानर वीरों ने साथ चलने की प्रार्थना की। श्रीराम ने उन सबको विमान पर बैठा लिया। आज्ञा पाते ही विमान उड़ चला। वानर अपने-अपने घर चले गये।

विमान उत्तर की और उड़ने लगा। श्रीराम सीता को प्रमुख स्थानों के नाम बताते जाते थे, "देखो! त्रिकूट पर्वत पर बसी यह लंका कितनी सुंदर है। यह देखो रणभूमि है, देखो- लक्ष्मण और सुग्रीव के मारे हुए कितने राक्षस पड़े हुए हैं। देखो यह नीचे सेतु बंध है। यहीं विभीषण से मेरी मित्रता हुई थी वह देखो आगे किष्किंधा है यहीं वानर राज सुग्रीव की राजधानी है।"

किष्किंधा को देखकर सीता जी बोली, "मेरी इच्छा है कि सुग्रीव की रानियां भी हमारे साथ अयोध्या चलें।"

विमान को नीचे उतरने की आज्ञा हुई। सुग्रीव अंत:पुर में गए। युद्ध का समाचार देकर उन्होंने तारा से सीता जी के अनुरोध की बात कही। तारा, रूमा और अन्य रानियां तैयार होकर विमान पर आ गई। विमान फिर उड़ चला।

श्रीराम ने सीताजी को ऋष्यमूक पर्वत दिखाया, यहीं सुग्रीव से मेरी मित्रता हुई थी। पंपा सरोवर के किनारे राम ने शबरी का आश्रम दिखाया और कहा कि जब मैं तुम्हारे वियोग में भटक रहा था तो यहीं शबरी से मेरी भेंट हुई थी। फिर उन्होंने कंबध-वध, रावण-जटायु संग्राम के स्थान सीता जी को दिखाए - "सीता देखो, यह जन स्थान है। यह देखो पंचवटी में हमारी पर्णकुटी अभी तक बनी हुई है। यह गोदावरी नदी की विशाल धारा ऊपर से कैसी पतली दिखाई दे रही है।" अगस्तय के आश्रम, सती अनुसूया के आश्रम, चित्रकूट और यमुना नदी पर उड़ता हुआ विमान प्रयाग पहुंचा। तुंरत ही श्रृंगवेरपुर दिखाई देने लगा और फिर सरयू और अयोध्या नगरी भी दिख पड़ी। राम ने कहा, "सीता, अपनी नगरी को नमस्कार करो। यह मेरी मातृ-भूमि मुझको प्राणों से भी प्यारी है। यहां का हर व्यक्ति मुझे प्यारा लगता है।" सबने अयोध्या को प्रणाम किया।

राम की आज्ञा से विमान लौटकर भरद्वाज मुनि के आश्रम में उतरा। श्रीराम ने मुनि को प्रणाम कर अयोध्या का कुशल समाचार पूछा। मुनि ने बताया कि अयोध्या में सब कुशल है। धर्मात्मा भरत आपके दर्शन के लिए व्याकुल हैं। आज रात यहीं रहें कल अयोध्या चले जाएं। श्रीराम ने मुनि का आतिथ्य स्वीकार कर लिया। मुनि के प्रताप से सब वृक्ष फलों से लद गए। सबने अमृत के समान मीठे फल खाए। तब श्रीराम ने हनुमान से कहा, "तुम अयोध्या जाकर हमारे आने की सूचना भरत को दो। रास्ते में निषादों के राजा गुह से भी मिलना। वे मेरे बड़े मित्र हैं। उनसे तुम्हें भरत का सच्चा समाचार मिल जाएगा। भरत से

मिलकर उनके भावों को ध्यान से देखना। हो सकता है, वे अब राज्य न छोड़ना चाहते हों। जैसा हो तुरंत समचार लाओ।''

मनुष्य का रूप बनाकर हनुमान पहले गुह से मिले और भरत का समाचार लिया। फिर नंदिग्राम में भरत के पास पहुंचे। राम के आने का समाचार पाकर भरत फूले न समाए।

अयोध्या का समाचार लेकर हनुमान श्रीराम के पास पहुंच गए। विमान अयोध्या की ओर उड़ चला। इधर अयोध्या में श्रीराम, सीता और लक्ष्मण के स्वागत की तैयारियां होने लगीं। सारा नगर बंदनवारों और पताकाओं से सज गया। तरह-तरह के बाजे बजने लगे। माताओं ने आरती के थाल सजाए। भरत ने राम चरण पादुकाएं सिर पर रख लीं। विमान की प्रतीक्षा में सब लोग नंदिग्राम इकट्ठे हो गए।

विमान को देखते ही श्रीराम चन्द्र की जय से आकाश गूंज गया। रामचन्द्र जी के उतरते ही भरत ने उनके चरणों में प्रणाम किया। श्रीराम ने भरत को गले से लगा लिया। शत्रुघ्न से मिलकर राम अब अयोध्यावासियों से मिले। शत्रुघ्न ने लक्ष्मण और सीता जी के चरणों में प्रणाम किया। माताओं के चरणों में प्रणाम कर श्रीराम वशिष्ठ जी के आश्रम में गए और उन्हें प्रणाम कर आशीर्वाद प्राप्त किया। भरत और शत्रुघ्न, विभीषण, सुग्रीव आदि सभी से मिले। पुष्पक विमान को श्रीराम ने कुबेर के पास चले जाने की आज्ञा दी।

## अयोध्या में राम का राज्याभिषेक

अब राम ने राजभवन में प्रवेश किया। सीताजी ने माताओं के चरण छुए और मनचाहा अशीर्वाद पाया। गुरु वशिष्ठ ने कहा, ''कल सवेरे ही राम का राजतिलक होगा।'' भरत बराबर राम से प्रार्थना कर ही रहे थे। राजतिलक की तैयारियां होने लगीं। गुरु ने स्वर्णजड़ित सिंहासन मंगवाया। राम और सीता उस पर बैठे। सबसे पहले वशिष्ठ ने राजतिलक किया उसके बाद अन्य ब्राह्मणों ने टीका करके अशीर्वाद दिए। माताओं ने आरती उतारी और मंगल गीत गाए। प्रजा में आनंद की लहर दौड़ गई। इन्द्र ने सौ कमलों की माला राम के लिए भेजी। इस अवसर पर श्रीराम ने सुग्रीव, विभीषण, अंगद आदि को बहुमूल्य उपहार दिए। सीताजी ने अपना कंठहार उतारा। राम ने कहा, 'जिस पर तुम सबसे अधिक प्रसन्न हो, उसे दे दो।' सीताजी ने यह कंठहार हनुमान को दे दिया। तारा और रुमा को सीताजी ने बहुमूल्य रत्न और वस्त्र उपहार में दिए। सिर से लगाकर हनुमान ने इसे गले में पहन लिया। सुग्रीव, विभीषण आदि कुछ दिन तक अयोध्या में रहकर अपने-अपने नगर को लौट चले।

श्रीराम ने दीर्घ काल तक अयोध्या में राज किया। उनके राज्य में प्रजा सब तरह से सुखी थी। सब लोग धर्म का पालन करते थे। किसी के साथ भेदभाव न था। किसी को न कोई रोग हुआ और न अकाल मृत्यु। समय पर पानी बरसता था धरती भरपूर अन्न देती थी। वृक्ष फूलों और फलों से लदे रहते थे।

राम राज्य को हम आज भी याद करते हैं और देश में उसे फिर से ले आने का स्वप्न देखते हैं।

## प्रश्न

1. रावण की लंका की प्रतिरक्षा करने वाले प्रमुख राक्षस वीरों के नाम बताओ।
2. अंगद को राम ने लंका किस उद्देश्य से भेजा था ?
3. पहले दिन की मुठभेड़ का संक्षेप में हाल लिखो।
4. राम और कुंभकर्ण के युद्ध का वर्णन करो।
5. लक्ष्मण और मेघनाद के अंतिम युद्ध का वर्णन करो।
6. मेघनाद ने अपने चाचा विभीषण की किन शब्दों में निंदा की ? विभीषण और मेघनाद के विषय में उससे क्या पता लगता है ?
7. श्रीराम ने क्यों कहा– 'यदि मेघनाद मारा गया तो हम युद्ध में जीत गए' श्रीराम के इस कथन से क्या प्रकट होता है ?
8. जामवंत ने एक बार कहा था– "अगर हनुमान जिन्दा है तो हम सब जिन्दा हैं।" उदाहरण देकर इस कथन की सत्यता सिद्ध करो।
9. राम रावण युद्ध में राम और रावण दोनों के पराक्रम सम्बन्धी घटनाओं का उल्लेख करो।
10. राम रावण का–सा युद्ध फिर देखने को न मिलेगा– इस कथन के आधार पर राम रावण के युद्ध का वर्णन कीजिए।

# अर्थ सहित सरल श्लोक

1. *सत्यमेवेश्वरो लोके, सत्ये धर्म सदाश्रितः।*
*सत्यमूलानि सर्वाणि, सत्यान्नास्ति परम पदम्॥*
(सत्य ही संसार में ईश्वर है। धर्म भी सत्य पर टिका है।
सत्य के मूल में सब कुछ है। सत्य के बिना परम पद नहीं है।)

2. *विक्लवो वीर्यहीनोः यः स दैवमनुवर्तते*
*वीराः सम्भावितात्मानो न दैव पर्युपासते॥*
(जो कायर और शक्ति हीन है, वे ही दैव (भाग्य) पर भरोसा करते हैं।
वीर पुरूष जो लोक से सम्मानित होते हैं, देव की उपासना नहीं करते हैं।)

3. *धर्मार्थः प्रभवति धर्मात् प्रभवेत् सुखम्।*
*धर्मेण लभते सर्व धर्मसारमिंद जगत्॥*
(धर्म से अर्थ (धन) प्राप्त होता, धर्म से सुख का उदय होता है और धर्म से मनुष्य सब कुछ प्राप्त करता है। अतः धर्म ही संसार में सार है।)

4. *सुलभाः पुरूषाः राजन् सततं प्रियवादिनः।*
*अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः॥*
(राजन, सदा प्रिय वचन बोलने वाले पुरुष सुलभ हैं, परंतु जो अप्रिय होने पर भी हितकर हो, ऐसी बात कहने और सुनने वाले दोनों ही दुर्लभ हैं।

5. *न चाति प्रणयः कार्यः कर्तव्योऽप्रणयश्च ते।*
*उभयं हि मह्मदोष तंस्मादन्तरद्दग्भव॥*
(न तो किसी से अधिक प्रेम करना चाहिए, न ही अधिक वैर करना चाहिए। क्योंकि दोनों में ही महान दोष है। बीच का रास्ता ही अच्छा होता है।)

6. *निरूत्साह दीनस्य शोक पर्याकुलात्मनः।*
*सर्वथा व्यवसीदन्ति व्यसनं चाधिगच्छति॥*
(उत्साह से हीन, शोक से आकुल (व्यक्ति) सब प्रकार से दुःखी होते हैं और विनाश को प्राप्त होते हैं।)

7. *गुणवान् परजनः स्वजनो निर्गुऽणोपिवा।*
*निर्गुणः स्वजनः श्रेयान् यः परः एव सः॥*
(यदि परजन (दूसरे लोग) गुणवान हों और स्वजन (अपने लोग) गुणहीन भी हों तो गुणहीन स्वजन ही अपनाने योग्य हैं, क्योंकि दूसरे श्रेष्ठ होने पर भी अपने नहीं हो सकते।)

8. *जले तरूणसूर्याभैः षटपदाहत केसरैः।*
*पंकजे शोभते पंपा समन्तादभि संवृत्ताः॥*
(जल में पड़नेवाली प्रातः कालीन सूर्य की आभा वाले, पुष्पकेसर पर (रसपान करने वाले) भ्रमरों वाले कमलों से युक्त पंपा सरोवर सुशोभित हो रहा है।)

9. *क्वाचित् प्रकाशं क्वचिद प्रकाशं, नभ प्रकीर्णाम्बुधर विभाति।*
*क्वचित् क्वचित पर्वत संनिरूद्ध, रूपं यथा शान्त महार्णवस्य॥*
(आकाश में सब ओर बादल छिटके हुए है। कहीं तो उन बादलों से ढक जाने के कारण आकाश दिखाई नहीं देता है और कहीं उनके फट जाने पर वह स्पष्ट दिखाई देने वाला है, जैसे जिस महासागर की तरंग मालाएं शांत हो गई हों उसका रूप कहीं तो पर्वत मालाओं से छिप जाने के कारण नहीं दिखाई देता है और कहीं पर्वतों की आवरण न होने के कारण दिखाई देता है।)

10. *विद्युत्पताका सबला कमालाः शैलेन्द्र कूटाकृति संनिकाशाः।*
*गर्जन्ति मेघाः समुदीर्ण नादा, मता गजेन्द्रा इव संयुगस्था॥*
(जैसे युद्ध स्थान में खड़े मतवाले गजराज उच्च स्वर में चिंघाड़ते हैं, उसी प्रकार गिरिराज के शिखरों की-सी आकृति वाले मेघ जोर से गर्जना कर रहे हैं। चमकती हुई बिजलियां इन मेघ रूपी गजराओं, पताकाओं के समान फहरा (चमक) रही है और बगुलों की पक्तियां माला के समान शोभा दे रही हैं।)

11. *इमाणि शुभ गंधाणि पश्य लक्ष्मण सर्वशः।*
*नलिनानि प्रकाशन्ते ते जल तरूण सूर्यवत्॥*
(लक्ष्मण, देखो पंपा के जल में सब ओर खिले हुए ये सुगंधित कमल प्रातः काल के सूर्य की भांति प्रकाशित हो रहे है।)

# प्रमुख पात्रों का परिचय

| | | |
|---|---|---|
| 1. | अंगद | बालि का पुत्र। |
| 2. | अगस्तय | एक ऋषि। यह पहले आर्य ऋषि है जिन्होंने विन्ध्याचल पर्वत को पार किया था और दक्षिण भारत गए थे। |
| 3. | अहिल्या | गौतम ऋषि की पत्नी, इनके साथ इंद्र ने छल किया था। इनके पति ने इन्हें शाप दिया। श्रीराम ने इन्हें शाप से मुक्त किया। इनकी भी गणना पंचकन्याओं में की जाती है। |
| 4. | उर्मिला | जनक की पुत्री और लक्ष्मण की पत्नी। |
| 5. | ऋष्यश्रृंग | एक ऋषि, उन्होंने राजा दशरथ से पुत्र प्राप्ति के लिए यज्ञ कराया था। |
| 6. | कबंध | दंडक वन का एक महाशक्तिशाली दैत्य। इंद्र के वज्र प्रहार से उसका सिर उसके धड़ में घुस गया था। इसी कारण वह कबंध कहलाता था। उसकी बांहें बहुत लंबी थीं। उन्हीं से वह दूर-दूर तक का आहार प्राप्त करता था। वनवास के समय राम और लक्ष्मण को भी उसने पकड़ लिया था। राम तथा लक्ष्मण ने एक गहरा गड्ढा खोदकर उसको गाड़ दिया। |
| 7. | कुंभकर्ण | रावण का भाई। राम-रावण युद्ध में राम ने इसका वध किया था। |
| 8. | केवट | वह नाविक जिसने श्रीराम, लक्ष्मण और सीता को गंगा पार कराई थी। |
| 9. | कैकेयी | दशरथ की सबसे छोटी रानी, भरत की माता। |
| 10. | कौशल्या | दशरथ की सबसे बड़ी महारानी, श्रीराम की माता। |
| 11. | गुह | श्रृंगवेरपुर के निषादों का राजा। श्री राम का वह अनन्य भक्त था। श्रृंगवेरपुर पहुंचने पर गुह ने ही राम का स्वागत सत्कार किया था। |
| 12. | गौतम | अहिल्या के पति, तपस्वी ऋषि। |
| 13. | जनक | यह विदेह भी कहे जाते हैं। यह जनकपुर के राजा थे और श्रीराम की पत्नी सीता जी के पिता थे। राजा होकर भी ये ऋषियों का-सा जीवन व्यतीत करते थे। |

| | | |
|---|---|---|
| 14. | जामवंत | यह रीछ थे। सुग्रीव की वानर सेना के साथ इनकी रीछों की सेना भी राम की सहायता करने गई थी। यह बड़े बुद्धिमान थे। |
| 5. | ताड़का | महाबली राक्षसी जो मिथिला के निकट वनों में रहती थी। जब विश्वामित्र राम–लक्ष्मण को अपने यज्ञ की रक्षा के लिए ले जा रहे थे तब इसने उन पर आक्रमण कर दिया था। राम ने इसका वध कर दिया। |
| 16. | तारा | बालि की पत्नी और अंगद की माता वह पंचकन्याओं में एक हैं और पूज्य मानी जाती हैं। |
| 17. | त्रिजटा | रावण की अशोक वाटिका में रहने वाली एक राक्षसी। वह राम भक्त थी और सीता के प्रति बड़ी सहानुभूति रखती थी। |
| 18. | दशरथ | रघुवंश के प्रतापी राजा। उनकी इंद्र से भी मित्रता थी। उनका राज्य कौशल प्रदेश में था और अयोध्या उनकी राजधानी थी। |
| 19. | देवरात | जनक के पूर्वज जिनके पास परशुराम ने शंकर का धनुष सुनाभ (पिनाक) रख दिया था। |
| 20. | नल | सुग्रीव की सेना का वानर वीर। |
| 21. | नील | सुग्रीव का सेनापति। उसे वरदान प्राप्त था कि उसके स्पर्श से पत्थर भी पानी पर तैरने लगते थे। उसी ने लंका जाने के लिए सेतु बंध की रचना की थी। |
| 22. | प्रहस्त | रावण का सेनापति। यह राम–रावण युद्ध में मारा गया। |
| 23. | बालि | पंपापुर का राजा। उसमें साठ हजार हाथियों का बल था जो उससे लड़ता था उसका आधा बल उसमें आ जाता था। इसी कारण श्रीराम ने उसे पेड़ की ओट से मारा। रावण से भी उसकी मित्रता थी। |
| 24. | भरत | राजा दशरथ और कैकयी के पुत्र। |
| 25. | मंथरा | कैकेयी की मुँहलगी दासी जो कुबड़ी थी और स्वभाव से कुटिल थी। |
| 26. | मंदोदरी | रावण की पत्नी थी। बालि की पत्नी तारा और मंदोदरी बहनें थीं। वह भी पंच कन्याओं में से थी और पूज्य थी। |

27. मतंग ऋषि — श्रीराम के समकालीन एक महान ऋषि बालि की राजधानी पंपापुर के निकट उनका आश्रम था। शबरी उनके प्रति बड़ी श्रद्धा रखती थी और ऋषि की अनुमति से उनके आश्रम में रहने लगी थी

28. मांडवी — जनक के भाई कुशध्वज की पुत्री और भरत की पत्नी।

29. मारीच — ताड़का का पुत्र। यह विश्वामित्र के यज्ञ का विध्वंस करने आया था। स्वर्णमृग बनकर सीता हरण में इसने रावण को सहयोग प्रदान किया और श्रीराम के द्वारा मारा गया।

30. मेघनाद — रावण का पुत्र। राम-रावण युद्ध में इसका वध लक्ष्मण ने किया। इसका नाम इन्द्रजीत भी था।

31. राम — दशरथ के सबसे बड़े पुत्र। विष्णु के अवतार माने जाते हैं और असुरों का विनाश करने के लिए यह अवतार त्रेतायुग में हुआ था।

32. रावण — ऋषि पुलस्य का पौत्र और विश्रवा का पुत्र। विश्रवा के तीन पत्नियाँ थी- पुष्पोकत्कटा, राका और मालिनी। रावण पुष्पोकत्कटा का पुत्र था। रावण के एक भाई और एक बहन थे। भाई कुंभकर्ण था और कुंभीनसी बहन थी। विश्रवा की दूसरी पत्नी राका का पुत्र विभीषण था। इस प्रकार विभीषण रावण का सौतेला भाई था। तीसरी रानी मालिनी के तीन पुत्र थे। खर, दूषण ओर त्रिशिरा। उसके एक पुत्री थी। उसका नाम सूर्पनखा था। रावण लंका का विश्व-विख्यात राजा और शंकर का परम भक्त था। चारों वेदों का ज्ञाता और विद्वान पंडित था। श्रीराम द्वारा रणक्षेत्र में उसका वध हुआ।

33. रूमा — सुग्रीव की पत्नी।

34. लक्ष्मण — राजा दशरथ के पुत्र। राम के प्रति एकनिष्ठ। इन्होंने श्रीराम की सेवा में अपना जीवन व्यतीत किया और जीवन भर छाया की भांति उनकी सेवा में लगे रहे। इनका भ्रातृप्रेम अनुकरणीय है।

35. वशिष्ठ — अयोध्या के सूर्यवंशी राजाओं के कुल गुरु।

36. विभीषण — रावण का राम भक्त भाई। रावण ने उन्हें निकाल दिया था। यह राम से जाकर मिल गए और राम की सहायता की। रावण की मृत्यु के बाद वही लंका के राजा बने।

| | | |
|---|---|---|
| 37. | विराध | दंडक वन में रहने वाला एक राक्षस। इसका राम-लक्ष्मण ने मिल कर वध किया था। |
| 38. | विश्वामित्र | राजा गाधि के पुत्र। मूलतः राजर्षि थे पर अपनी तपस्या के बल पर ब्रह्मर्षि बने थे। श्रीराम और लक्ष्मण ने इन्हीं से उच्चकोटि की धनुर्विद्या सीखी थी। |
| 39. | शंबासुर | एक राक्षस जिसको इंद्र ने मारा था। उस युद्ध में इंद्र की सहायता के लिए राजा दशरथ भी गए थे। |
| 40. | शत्रुघ्न | राजा दशरथ और सुमित्रा के पुत्र। इन्होंने राम राज स्थापित होने पर अनेक राजाओं को पराजित किया और मथुरा के राजा लवणासुर का वध किया। |
| 41. | शरभंग | एक ऋषि। इनका आश्रम चित्रकूट के निकट था। |
| 42. | शबरी | शबरी भगवान की भक्ति साधना में लगी रहती थी। वह अस्पृश्य जाति की थी। जब राम-लक्ष्मण मतंग ऋषि के आश्रम में गए तो उन्होंने बड़े प्रेम से शबरी के आतिथ्य को स्वीकार किया। |
| 43. | श्रुतकीर्ति | जनक के भाई कुशध्वज की पुत्री और शत्रुघ्न की पत्नी। |
| 44. | संपाती | जटायु का बड़ा भाई। एक बार उगते सूर्य को फल समझकर खाने की इच्छा से उड़ा। सूर्य के समीप पहुंचने पर उसके पंख जल गए और वह पृथ्वी पर गिर पड़ा। उसी ने सीता की खोज में निकले वानरों को सीता का पता बताया था। |
| 45. | सिंहिका | लंका के निकट समुद्र में रहने वाली राक्षसी। वह छाया को पकड़कर ही अपना आहार प्राप्त कर लेती थी। |
| 46. | सीता | जनक की पुत्री जो पृथ्वी से उत्पन्न हुई कही जाती है। |
| 47. | सुग्रीव | बालि का छोटा भाई जिसको बालि ने मार-पीट कर अपनी राजधानी पंपापुर से निकाल दिया था। वनवास के समय हनुमान ने उसकी श्रीराम से मित्रता कराई। उसने सीता को पुनः प्राप्त करने में श्रीराम की बड़ी सहायता की थी। |
| 48. | सुतीक्ष्ण | अगस्त्य मुनि के शिष्य, एक ऋषि। |
| 49. | सुबाहू | मारीच का साथी राक्षस। यह भी विश्वमित्र के यज्ञ का विध्वंस करने आया था। उसी समय श्री राम ने इसको मार डाला था। |

| | | |
|---|---|---|
| 50. | सुमित्रा | दशरथ की मँझली रानी-लक्ष्मण और शत्रुघ्न की माता। |
| 51. | सुरसा | सर्पों की माता। सर्पों का आहार पवन है इसलिए उसने पवनपुत्र हनुमान से कहा था कि मैं तुमको खाऊँगी। |
| 52. | सूर्पणखा | रावण की बहन। यह विंध्य क्षेत्र में रहती थी। लक्ष्मण ने इसके नाक-कान काट दिए थे। |
| 53. | हनुमान | पवन पुत्र थे। इन्होंने राम की सुग्रीव से मित्रता करवाई थी। यह बड़े बुद्धिमान और ज्ञानी थे। उन्होंने अनेक पराक्रम के काम किए। |

# संपूर्ण पुस्तक पर प्रश्न

1. राजा दशरथ के दरबार में विश्वामित्र किस उद्देश्य से आए थे ?
2. राजा जनक ने अपनी पुत्रियों का विवाह राजा दशरथ के पुत्रों के साथ क्यों किया ?
3. राम को वनवास देने में कैकेयी को सफलता क्यों मिली ?
4. वनवास के समय राम ने कौन-कौन से राक्षसों का वध किया ?
5. हनुमान ने राम के संपर्क में आने के बाद कौन-कौन से पराक्रम के कार्य किए ?
6. भरत ने किस प्रकार अपने भ्रातृ प्रेम का परिचय दिया ?
7. विभीषण के चरित्र पर संक्षेप में प्रकाश डालो।
8. राम-राज की क्या विशेषताएं थीं ? हम भारत में राम-राज लाने के प्रयत्न में कहां तक सफल हुए हैं ?
9. रावण राम को अपना शत्रु क्यों मानने लगा था ?
10. किस आधार पर हम कह सकते हैं कि सीता भारत की आदर्श नारी थी ?
11. राम को अपने जीवन में किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा ?
12. राम के जीवन का क्या लक्ष्य था और उस लक्ष्य को प्राप्त करने में उन्हें कहां तक सफलता प्राप्त हुई ?.
13. राम के चरित्र की विशेषताएं विस्तार में बताओ।
14. रामायण की कथा संक्षेप में लिखो।